International Journal of Arts & Education Research

खिलाड़ी छात्रों एवं सामान्य छात्रों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

प्रदीप कुमार,
शोध छात्र,
मेवाड विश्वविद्यालय,
चित्तौडगढ़ (राजस्थान)

प्रो0 डॉ0 अमरेश कुमार
अधिष्ठाता शिक्षा एवं मनोविज्ञान संकाय तथा प्राचार्य
शारीरिक शिक्षा एवं क्रीडा विभाग, मेवाड विश्वविद्यालय
चित्तौडगढ़ (राजस्थान)

सारांश :

प्रस्तुत शोध कार्य में खिलाड़ी छात्रों एवं सामान्य छात्रों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है इस शोध कार्य में बागपत जनपद के उन 10 विद्यालयों के 300 विद्यार्थियों (150 खिलाड़ी छात्र एवं 150 सामान्य छात्र) को चुना गया जिनमें शारीरिक शिक्षा की उपलब्धता एवं शारीरिक शिक्षा के विषय को महत्व दिया जाता है। उन विद्यार्थियों की आयु 14 वर्ष से 19 वर्ष थी इस शोध की परिकल्पना के अनुसार खिलाड़ी छात्र एवं सामान्य छात्र के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है इस शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया हैं ऑकड़े प्रश्नावली और साक्षात्कार विधि द्वारा एकत्रित किये गये है। इस शोध की प्रश्नावली डा0 बी0सी0 कापड़ी के द्वारा वर्ष 2005 में तैयार की गई थी। प्रश्नावली एवं साक्षात्कार विधि द्वारा प्राप्त ऑकड़ों का विश्लेषण योग निर्धारण विधि द्वारा किया गया ह। शोधकर्ता ने परिकल्पना की पुष्टि और स्पष्ट करने के लिए प्रश्नावली विधि और साक्षात्कार विधि से प्राप्त आंकड़ों का माध्य निकाला तो पाया कि खिलाड़ी छात्रों का मूल्यों के प्रति रूझान 74.75 प्रतिशत और सामान्य छात्रों का मूल्यों प्रति रूझान 55.25 प्रतिशत था। इन सभी निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि खिलाड़ी छात्रों का मूल्यों के प्रतिरूझान सामान्य छात्रों की तुलना में अधिक होता है। अतः निर्धारित की गई परिकल्पना स्वतः ही निरस्त हो जाती है।उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि खिलाड़ी छात्रों एवं सामान्य छात्रों के मूल्यों में सार्थक अन्तर होता है।

मुख्य शब्द *:* ऑकंड़े, प्रश्नावली, योग निर्धारण विधि

प्रस्तावनाः

शिक्षा बालक का सर्वागीण विकास करके उसे तेजस्वी, बुद्धिमान, चरित्रवान, विद्धान तथा वीर बनाती है उसी प्रकार दूसरी और शिक्षा समाज की उन्नति के लिए भी एक आवश्यक तथा शक्तिशाली साधन है। दूसरे शब्दों में, व्यक्ति की भाँति समाज भी शिक्षा के चमत्कार से लाभान्वित होता है। शिक्षा के द्वारा समाज भावी पीढ़ी के बालकों को उच्च आदर्शों आशाओं, आंकाक्षाओं, विश्वासों तथा परम्पराओं आदि संस्कृति–सम्पति को इस प्रकार में हस्तान्तरित करता हैं।

शिक्षा प्राप्त करके बालक की योग्यता का विकास होता है जिनके परिणामस्वरूप वह अच्छी बातें सीखता है तथा बुरी बातों का परित्याग कर देता है। शिक्षा ही बालक की सम्भावनाओं को पूरा करती है तथा उसकी आन्तरिक शक्तियों को जाग्रत करती है। कहने का तात्पर्य यह है कि सच्ची शिक्षा बालक का उचित दिशा में विकास करती

है तथा उसके जीवन को सुखी तथा सफल बनाती है। अतः प्रत्येक शिक्षा शास्त्री का मत है कि शिक्षा का प्रमुख कार्य बालक के व्यक्तित्व का सर्वागीण विकास करना है।

नैतिकता प्रत्येक राष्ट्र की बहुमूल्य सम्पत्ति हैं, अतः शिक्षा का कार्य बालक को नैतिकता का प्रशिक्षण देना है। प्रसन्नता की बात है कि हमारा देष नैतिकता की दौड़ में विश्व के सभी देषों से सदैव आगे ही रहा है, परन्तु खेद की बात है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् अब राष्ट्रीय जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में अनैतिकता का साम्राज्य दिखाई पड़ रहा है। ऐसी दशा में राष्ट्र के विकास को दृष्टि में रखते हुए भारत के नागरिकों के लिए नैतिक प्रशिक्षण और भी आवश्यक हो जाता है। शिक्षा बालक के अन्दर सत्य, प्रेम तथा त्याग आदि अनेक वांछनीय गुणों को विकसित करके नैतिक विकास करतो है।

सोही 1982 ने अपने अध्ययन में भारतीय एथलीट खिलाड़ियों के सामाजिक तृष्टिकरण और सामाजिक गतिशीलता के सापेक्ष आख्या प्रस्तुत की। उन्होंने एक अन्तर्राष्ट्रीय स्पर्धा के लिए एक टीम तैयार करने हेतु 7 खेलों के 180 प्रतिभागियों, जो कोचिंग हेतु उपस्थित हुए थे, का एक प्रश्नावली के द्वारा मूल्यांकन किया। जिसमें उन्होंने उनकी जाति और सामाजिक वर्ग को सम्मिलित किया और पाया कि परम्परागत जाति या प्रणाली के अनुसार उनमें से अधिकांष उच्च जाति के सम्बन्धित थे। सामाजिक व्यवस्था के अनुसार अधिकांष खिलाड़ी मध्य वर्ग से सम्बन्धित थे। इस अध्ययन में उन्होंने यह भी बताया कि सामाजिक व्यव्स्था का भी प्रभाव खिलाड़ियों की शारीरिक दक्षता पर पाया जाता है।

शोध समस्या कथन

प्रस्तुत शोध कार्य में खिलाड़ी छात्रों एवं सामान्य छात्रों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया हैं।

मुख्य शब्दों की व्यवहारिक परिभाषा

सामान्य छात्र : सामान्य छात्र का अभिप्राय उन छात्रों से है जो विभिन्न विद्यालयों में औपचारिक शिक्षा ग्रहण करते हैं एवं किसी खेल विशेष अथवा व्यवसायिक शिक्षा से कोई सम्बन्ध नहीं रखते है।

खिलाड़ी छात्र : खिलाड़ी छात्र का अभिप्राय उन छात्रों से है जो विभिन्न विद्यालयों में औपचारिक शिक्षा ग्रहण करते हैं एवं किसी खेल विशेष से सम्बन्ध रखते है, तथा विद्यालय की खेल–प्रतियोगिताओं में भाग लेते है।

मूल्य : मूल्य का तात्पर्य सद्गुणों के विकास एवं मनुष्य में आस्था विकसित करने से है। यद्यपि (मूल्य) को दर्षन के अनुसार परिभाषित करना एवं सम्पूर्ण विषय व्यवस्थित करने से भी हो सकता है, परन्तु शोधार्थी द्वारा खेल विषेषज्ञों से प्राप्त जानकारियों के अनुसार मूल्यों का आषय खेलों अथवा शारीरिक शिक्षा के द्वारा खिलाड़ी में धैर्य, संवेदनषीलता, भ्रातृत्व भावना, आत्म विश्वास एवं सहयोग की भावना को विकसित करने से है।

शोध समस्या के उद्देश्य :

1. सामान्य व खिलाड़ी छात्रों कें मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. सामान्य व खिलाड़ी छात्रों कें मूल्यों का विकास करना।

परिकल्पना :

सामान्य व खिलाड़ी छात्रों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमायें:

1. इस शोध प्रबन्ध के लिए उन छात्रों का चयन किया गया जिनकी आयु 14 साल से 19 साल तक थी।
2. इस शोध प्रबन्ध के लिए बागपत जनपद के विद्यालयों को चुना गया, जिनमें शारीरिक शिक्षा की उपलब्धता है एवं शारीरिक शिक्षा को विषय के रूप में महत्व दिया जाता हैं।

शोध का महत्व

सर्वविदित है कि शिक्षा का लक्ष्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है और सर्वांगीण विकास में शारीरिक क्रिया–कलापों की एक विशेष भूमिका रहती है। आज हमारे देश में वर्तमान शिक्षा प्रणाली से हर व्यक्ति आहत प्रतोत होता हैं, क्योंकि शिक्षा के द्वारा हमारे विद्यालयों में शारीरिक, नैतिक, बौद्धिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का विकास अपेक्षा के अनुरूप नहीं हो पा रहा हैं, और समुचित विकास होने में विद्यालय की विशेष भूमिका रहती हैं। प्रस्तुत शोध के माध्यम से विद्यार्थियों के ऊपर सामान्य शिक्षा व शारीरिक शिक्षा के द्वारा पड़ने वाले अनुकूल व प्रतिकूल प्रभावों का अध्ययन किया गया है। अतः इस शोध प्रबन्ध द्वारा प्राप्त परिणामों से विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा शिक्षा जगत से जुड़ी प्रशासनिक व्यवस्थाओं आदि को विशेष लाभ प्राप्त होगा।

शाध की विधि एंव प्रक्रिया

इस अध्याय में प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त विधि, प्रश्नावली को प्रशासित करने की विधि, आकंड़ो का सकंलन तथा शोध में प्रयोग की जाने वाली समस्त तकनीकियों का संक्षिप्त विवरण दिया गया ळें

विधि

वर्तमान शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया हैं प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त विधि सम्पूर्ण रूप से उपयोग में लायी गयी प्रश्नावली पर निर्भर हैं चूँकि प्रश्नावली एवं साक्षात्कार द्वारा बच्चों पर शारीरिक शिक्षा के प्रभावों को समझने हेतु उनके मूल्यों से सम्बन्धित प्रश्नों को पूछा गया है और विद्यार्थियों क विचारों को जानकर शारीरिक शिक्षा के प्रभावों का मूल्यांकन किया गया हैं।

जनसंख्या :

बागपत जनपद के 10 इण्टमीडिएट कॉजिल जिनमें शारीरिक शिक्षा को समुचित व्यवस्था उपलब्ध है ऐसे इण्टरमीडिएट कॉलिजो में 14 वर्ष से 19 वर्ष की आयु वाले विद्यार्थियों का शोध हेतु अध्ययन किया गया है जिसे प्रस्तुत शोध की जनसंख्या माना गया हैं

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने 300 छात्रों का चयन बागपद जनपद के विभिन्न 10 इण्टरमीडिएट कॉलिजों में यादृच्छिक विधि से किया। सभी छात्रों का सामान्यतया 14 से 19 वर्ष की उम्र थी। प्रमुख छात्रों का समूह 9वीं कक्षा से 12वीं कक्षा तक ही थे। जनपद बागपद के कुल 10 विद्यालयों का इस अध्ययन हेतु 'यादृच्छित विधि' से

चयन किया गया सभी खिलाड़ी छात्रों एवं सामान्य छात्रों को पुनः यादृच्छिक विधि से चुनकर प्रत्येक कॉलिज से 30 (15 खिलाड़ी, 15 सामान्य छात्र) छात्रों को इस शोध अध्ययन के लिए उपयुक्त पाया गया।

परीक्षक विश्वसनीयता

खिलाड़ी छात्रों एवं सामान्य छात्रों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन को जानने के लिए प्रश्नावलियों का प्रयोग किया गया। प्रश्नावली में शारीरिक शिक्षा से जुड़े सभी प्रकार के प्रश्नों को स्थान दिया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण एवं प्रविधियाँ

प्रस्तुत अध्ययन एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन है। शारीरिक शिक्षा तथा खेलों का निश्चित प्रभाव जानने के लिए प्रस्तुत सर्वेक्षण विधि में प्रश्नावली एवं प्राप्त निष्कर्णों की विश्वसनीयता वैधता के प्रमाणीकरण हेतु साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया। विद्यार्थियों पर पड़ने वालें मूल्यों के प्रभाव को ज्ञात करने के लिए प्रयुक्त प्रश्नावली को डॉ0 बी0सी0 कापड़ी द्वारा वर्ष 2005–2006 में तैयार किया गया।

मूल्यांकन विधि

प्रश्नावलियों में उपयुक्त कथनों के आधार पर योग निर्धारण विधि द्वारा मूल्यांकन किया गया है।

आकंड़ों का प्रस्तुतीकरण

प्रस्तुत शोध में प्रश्नावली का पयोग किया गया हैं इस प्रश्नावली के द्वारा सामान्य छात्रों तथा खिलाड़ी छात्रों के मूल्यों के तुल्यात्मक अध्ययन को समझने में सफलता प्राप्त की गई। शोधकर्ता ने उपरोक्त प्रश्नावली का प्रयोग बागपत जनपद के चयनित इण्टरमीडिएट विद्यार्थियों के कुल 300 विद्यार्थियों (150 खिलाडी छात्र + 150 सामान्य छात्रों) पर किया।

सामान्य छात्रों एवं खिलाड़ी छात्रों के मूल्यों के तुलनात्मक अध्ययन को जानने के लिए प्राप्त आकड़ों को विभिन्न सारिणयों में प्रस्तुत किया गया है

सारणी संख्या 1

सामान्य छात्रों एवं खिलाड़ी छात्रों के मूल्यों का (प्रश्नावली के द्वारा प्राप्त आंकड़ो के आधार) पर तुलनात्मक अध्ययन

क्र.सं.	विद्यालय का नाम	खिलाड़ी छात्र	मूल्यों का :	सामान्य छात्र	मूल्यों का :
1.	श्री यमुना इण्टर कालिज वागपत	15	70	15	50
2.	डी0ए0वी0 टटीरी	15	75	15	60
3.	सर्वहितकारी इण्टर कालिज मीतली	15	75	15	40
4.	महामना मालवीय इण्टर कालिज खेकड़ा	15	45	15	55
5.	किसान इण्टर कालिज मवीकला	15	70	15	45
6.	महात्मा गॉधी इण्टर कालिज ढ़िकौली	15	65	15	70
7.	डी0जे0 इण्टर कालिज बड़ौत	15	60	15	35
8.	जे0पी0 इण्टर कालिज बड़ौत	15	85	15	50
9.	डी0एन0 इण्टर कालिज खट्टा प्रहलादपुर	15	75	15	40
10.	वैदिक कन्या इण्टर काजिज, टटीरी	15	70	15	50

सारणी 1 में दर्शाये गये सभी आंकड़ो से विदित होता है कि विभिन्न इण्टर कालिजों के खिलाड़ी छात्रों के मूल्यों की रंज 45: से 80: तक है तथा सामान्य छात्रों के मूल्यों की रंज 35: से 70: तक है।

सारणी संख्या 2

सामान्य छात्रों एवं खिलाड़ी छात्रों के मूल्यों का (साक्षात्कार विधि द्वारा प्राप्त आंकड़ो के आधार) पर तुलनात्मक अध्ययन

क्र.सं.	विद्यालय का नाम	खिलाड़ी छात्र	मूल्यों का :	सामान्य छात्र	मूल्यों का :
1.	श्री यमुना इण्टर कालिज वागपत	15	80	15	60
2.	डी0ए0वी0 टटीरी	15	90	15	70
3.	सर्वहितकारी इण्टर कालित मीतली	15	75	15	50
4.	महामना मालवीय इण्टर कालिज खेकड़ा	15	70	15	60
5.	किसान इण्टर कालिज मवीकला	15	80	15	65
6.	महात्मा गॉधी इण्टर कालिज ढ़िकौली	15	85	15	80
7.	डी0जे0 इण्टर कालिज बड़ौत	15	80	15	60
8.	जे0पी0 इण्टर कालिज बड़ौत	15	90	15	50
9.	डी0एन0 इण्टर कालिज खट्टा प्रहलादपुर	15	75	15	55
10.	वैदिक कन्या इण्टर काजिज, टटीरी	15	80	15	60

उपर्युक्त सारणी में विभिन्न कॉलेजों के सामान्य छात्रों एवं खिलाड़ी छात्रों का साक्षात्कार विधि द्वारा प्राप्त मूल्यों के आंकड़ों का वर्णन है। इन आंकड़ों के अनुसार खिलाड़ी छात्रों की रेंज 70 : से 90 : तथा सामान्य छात्रों की रेंज 50 : से 80 : है।

सारणी संख्या 3

बागपद जनपद के विभिन्न इण्टरमीडिएट कॉलिजों के 300 विद्यार्थियों (150 सामान्य एवं 150 खिलाड़ी छात्रों) के मूल्यों का अध्ययन (प्रश्नावली एवं साक्षात्कार आंकड़ो के माध्य के आधार पर)

क्र0सं0	विभिन्न आयाम	खिलाड़ी छात्र का प्रतिशत	सामान्य छात्रों का प्रतिशत
1	मूल्यों	74.75	55.25

उपर्युक्त सारणी संख्या के आधार पर यह प्रमाणित किया गया है कि प्रश्नावली विधि तथा साक्षात्कार विधि द्वारा प्राप्त ऑकड़ों के आधार पर खिलाड़ी छात्रों में मूल्यों 72.75 तथा सामान्य छात्रों में मूल्यों 55 प्रतिशत पाये गये।

रेखाचित्र

खिलाड़ी छात्रों एवं सामान्य छात्रों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

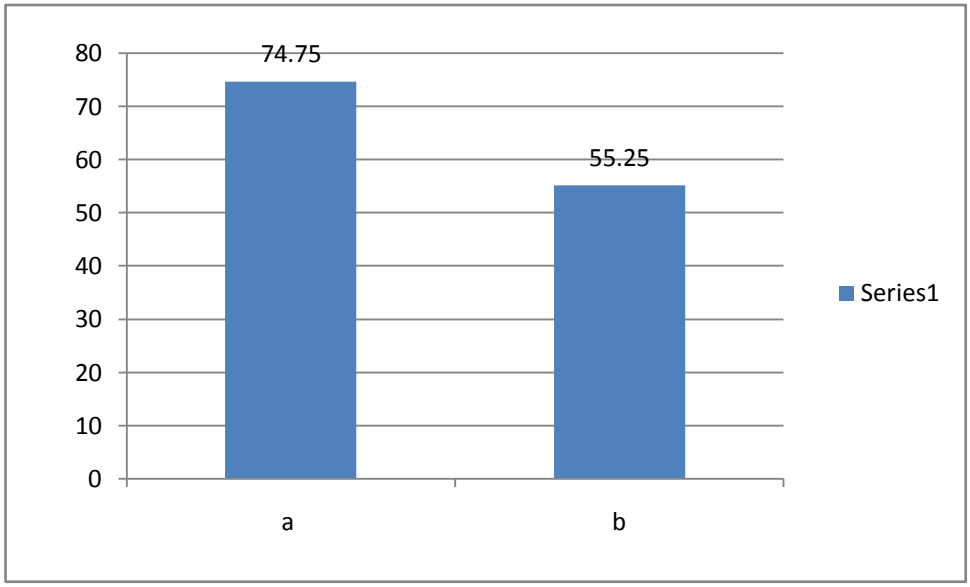

खिलाड़ी छात्रों के मूल यों का विकास
इ सामान्य छात्रों के मूल्यों का विकास

निष्कर्ष :

वर्तमान शोध का उद्देश्य खिलाड़ी छात्रों एवं सामान्य छात्रों के मूल्यों का अध्ययन करना था एवं शोध की जो परिकल्पना की गई थी कि खिलाड़ी छात्रों एवं सामान्य छात्रों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता। प्रश्नावली द्वारा प्राप्त आंकड़ों से प्राप्त होता है कि खिलाड़ी छात्रों का मूल्यों के प्रति रूझान 69 प्रतिशत था तथा सामान्य छात्रों का रूझाान 49.5 प्रतिशत था। साक्षात्कार विधि द्वारा प्राप्त आंकड़ों के अवलोकलन से भी यही बात स्पष्ट होती है कि खिलाड़ी छात्रों का मूल्यों के प्रति 80.5 प्रतिशत और सामान्य छात्रों का 61 प्रतिशत था इन दोनों विधियों से प्राप्त आंकड़ों से यही प्रतीत होता है कि खिलाड़ी छात्रों एवं सामान्य छात्रों के मूल्यों में सार्थक अन्तर होता है।

शोधकर्ता ने परिकल्पना की पुष्टि और स्पष्ट करने के लिए प्रश्नावली विधि और साक्षात्कार विधि से प्राप्त आंकड़ों का माध्य निकाला तो पाया कि खिलाड़ी छात्रों का मूल्यों के प्रति रूझान 74.75 प्रतिशत और सामान्य छात्रों का मूल्यों प्रति रूझान 55.25 प्रतिशत था।

इन सभी निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि खिलाड़ी छात्रों का मूल्यों के प्रतिरूझान सामान्य छात्रों की तुलना में अधिक होता है। अतः निर्धारित की गई परिकल्पना स्वतः ही निरस्त हो जाती है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि खिलाड़ी छात्रों एवं सामान्य छात्रों के मूल्यों में सार्थक अन्तर होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, रामनाथ, सामाजिक परिवर्तन (मेरठः मीनाक्षी प्रकाशन 1987)
2. तिवारी, डॉ0 रामानन्द, शिक्षा और संस्कृति (भरतपुरः भारती प्रकाशन 1970)
3. सिंह, सरस्वती, बच्चों का व्यक्तिगत विकास (दिल्लीः राधा प्रकाशन, 1995)
4. सोही ए.स. ''सोषल स्टेटस ऑफ इण्डियन एपलीट स्पोर्टसमैन इन परेस्पेक्टिव ऑफ सोषल स्ट्रेटीफिकेषन एण्ड मोविलिटी एण्ड इन्टरनेशनल रिव्यू ऑफ स्पोर्ट सोसालोजी (1981) 14 पी.पी. 61.77
5. कमलेश, एम0एस0, सग्रांल एम0एस0, शारीरिक शिक्षा में शिक्षण विधियाँ (लुधियानाः प्रकाशन ब्रादर्श 1990)।
6. कमलेश, मदन, शारीरिक शिक्षा की सैद्धान्तिकी (नई दिल्ली मेंट्रापोलिस बुक कम्पनी 1991)।
7. कनाल, आर.डी. शारीरिक शिक्षा स्वास्थ्य और खेल, (जालन्धर ए.पी. पब्लिषर्स 1986)।
8. कपूर, जे0ए0, सफलता परीक्षण द्वारा मापित छात्रवृत्ति पर खेलों में भाग लेने के प्रभाव का अध्ययन, पेनसिलवेनिया स्टेट, स्टूडेन्ट एजूकेशन, टप्प (1934) पृ0सं0 उद्वरण साइकलोजिकल एब्सूट्रेक्ट टप्प (1934) आर्टिकेल नं0 1811
9. कुमार, डॉ0 नरेश, राष्ट्रीय शिक्षा विकास प्रकाशन 1992